# सामाजिक परिवर्तन के कारण ग्रामीण पृष्ठभूमि में आये बदलावों पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

*पूनम रावत,*

*शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड*

## शोध सारांश

*गांव मनुष्य के सामूहिक जीवन का प्रथम पालना कहा जाता है। मनुष्य ने जब सबसे पहले सामूहिक रूप में रहना प्रारम्भ किया तो गांव ही उनके निवास स्थान थे। संसार की अधिकांश जनसंख्या आरम्भ से लेकर अब तक गांवों में ही बसी है। वर्तमान में भी भारतीय ग्रामीण जनसंख्या कुल जनसंख्या का 64.61 प्रतिशत है। परन्तु आजकल समय के साथ–साथ लोगों की धारणा बदल रही है। ग्रामीण समुदाय आधुनिकता से भी अछूते नहीं है। यातायात, संचार, समाचार–पत्र, शिक्षा, प्रशासन, सामुदायिक योजनाओं आदि ने आधुनिकीकरण को बढ़ावा दिया है, जिससे सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं। परिवार, जाति, स्थानिकता, धर्म आदि के सन्दर्भ में भी आधुनिकीकरण हो रहा है। जाति के भेद में व्यवसाय, संस्तरण, कर्मकाण्ड व पवित्रता की धारणा में अपेक्षित परिवर्तन हुए हैं। विवाह के नियमों में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह विश्लेषित किया गया है कि वर्तमान ग्रामीण समाज में कौन–कौन से सामाजिक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं।*

**मूल शब्द –** *सामाजिक परिवर्तन, ग्रामीण पृष्ठभूमि, बदलाव।*

## प्रस्तावना

आज ग्रामीण सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों यथा– परिवार, विवाह, मूल्य, परम्पराओं एवं अभिवृत्तियों में परिवर्तन होने लगे हैं। ग्रामीण समाज के परिवारों की संरचना और कार्यों में आज कई परिवर्तन आये हैं। अब ग्रामीण समाजों में संयुक्त परिवार व्यवस्था का प्रचलन लगभग समाप्त हो चुका है। इसका स्थान एकाकी परिवारों ने ले लिया है। विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि नगरीकरण, औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण, संस्कृतिकरण एवं लौकिकीकरण की प्रक्रियाओं से ग्रामीण समाज के दृष्टिकोणों एवं मूल्यों में सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन हुए हैं। मानव समाज ने परिवर्तन की एक लम्बी दूरी तय की है, जिसका मुख्य कारण यह है कि मानव समाज प्रकृति–प्रदत्त वातावरण से मानव–निर्मित वातावरण की ओर बढ़ा है। यातायात एवं संचार के माध्यमों में विकास ने भी हमारे भौतिक पर्यावरण में काफी बदलाव ला दिया है। इसका मुख्य श्रेय समाज में निरन्तर प्रौद्योगिक परिवर्तन को जाता है। हमारे जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं व्यवहार के प्रतिमानों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये हैं। **अलख नरायण सिंह** ने अपने शोध अध्ययन **"ग्रामीण समाज एवं परिवर्तन"** में यह बताया कि वर्तमान समय में ग्रामीण समाज के प्रत्येक पक्ष में परिवर्तन हो रहा है। आधुनिक मूल्यों, प्रथाओं, संस्थाओं में परिवर्तन हुआ है। परन्तु गांव आज भी अपनी परम्परा को पूर्ण त्याग करने को तैयार नहीं है तथा आंख मूंदकर आधुनिकीकरण तथा पश्चिमीकरण को अपनाने की स्थिति में नहीं है। एक तरफ तो वे जनेऊ भी

धारण करते हैं तथा दूसरी ओर अंग्रेजी पोशाक भी पहनते हैं। गांव में होने वाले परिवर्तनों के कारण गांव परिवर्तनों के संक्रमण के दौर में है। ग्रामीण समाज को परम्परगत् विचारधारा एवं आधुनिकीकरण के संगम स्थल के रूप में देखा जा सकता है।

एक अन्य शोध अध्ययन में **शंकर बिष्ट** ने निष्कर्ष में पाया कि नगरीकरण, औद्योगीकरण व तकनीकी विकास की वजह से आम पहाड़ी समाज में पारम्परिक कार्यों के प्रति लोगों की विमुखता व पलायन की प्रवृत्ति देखने को मिल रही है। जहां एक ओर पारम्परिक कृषि पद्धति व यंत्रों में परिवर्तन आया वहीं भवन निर्माण व निर्माण सामग्री का रूप भी निरन्तर बदलता गया। पूर्व में निर्मित होते आये मिट्टी, गारे, पत्थर व लकड़ी के भवन के स्थान पर ग्रामीण परिवेश में ईट, सीमेण्ट व लोहे के पक्के मकान बनने लगे हैं। जिसने यहां के पारम्परिक कारीगरों के हाथ से काष्ठकला व पत्थर तरासने की विशिष्ट पद्धति को नुकसान पहुँचाया है। अधिकतर परम्परागत व्यवसायियों की नई पीढ़ी पुश्तैनी व्यवसाय को नहीं करना चाहती, मां–बाप भी नहीं चाहते कि उनके बच्चे परम्परागत व्यवसाय कर उनकी तरह ही अभाव में जीवन व्यतीत करें।

प्रस्तुत शोध–पत्र में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान ग्रामीण समाज में हो रहे परिवर्तन से समाज मे किस प्रकार की समस्या उत्पन्न हो रही है अथवा क्या ऐसे कारक हैं जो इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप ग्रामीण समाज तथा ग्रामवासियों के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। कुछ मुख्य बिन्दु अध्ययन में प्रयुक्त कर उत्तरदाताओं से उनके जीवन में हो रहे परिवर्तन से उनके सम्पूर्ण जीवन पर आने वाले बदलाव व इस बदलाव से उत्पन्न समस्या के विभिन्न पहलुओं की जानकरी एकत्रित की गयी है।

## अध्ययन क्षेत्र एवं निदर्श

प्रस्तुत शोध पत्र ताड़ीखेत विकासखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में आये परिवर्तन के समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर आधारित है। उत्तराखण्ड राज्य कुमाँऊ व गढ़वाल मण्डल में विभक्त है। वर्तमान समय में उत्तराखण्ड राज्य में कुल 13 जनपद स्थित है। शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र कुमाँऊ मण्डल के अल्मोड़ा जनपद के अन्तर्गत आता है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु अल्मोड़ा जनपद के ताड़ीखेत विकासखण्ड के 2 न्याय पंचायतों में से चयनित 06 ग्राम पंचायतों का चयन दैव निदर्शन पद्धति के द्वारा किया गया है। अध्ययन में समग्र के रूप में 237 उत्तरदाताओं का चुनाव किया गया है।

## शोध अभिकल्प एवं पद्धतिशास्त्र

किसी भी शोध कार्य को एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए शोध प्रारूप का निर्माण किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में अन्वेषणात्मक–विवरणात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

## अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत शोधार्थी द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि ग्रामीण स्तर पर हो रहे सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव क्या है।

1. जति प्रथा समाप्त होनी चाहिए या नहीं पर ग्रामीणों की सहमति का स्तर का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण परिवेश में हो रहे विवाह प्रणाली में परिवर्तन पर ग्रामीणों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण वर्तमान में कृषि की अपेक्षा उद्योगों को अधिक महत्व देने लगे हैं इस विचार का अध्ययन करना।

4. क्या ग्रामों की साक्षरता में बदलाव आया है इस तथ्य का अध्ययन करना।
5. लड़कियों को उच्च शिक्षा देने के पक्ष में ग्रामीणों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

## शोध उपकरण

शोध में प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें उपयोगिता व आवश्यकता के आधार पर यथोचित स्थान पर द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग भी किया गया है। अध्ययन हेतु आंकड़ें साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्रित किये गये हैं। साथ ही साथ समाचार पत्रों, सम्बन्धित पुस्तकों, लाइब्रेरी, पूर्व में हुए अध्ययन, पत्र–पत्रिकाओं तथा असहभागी अवलोकन का प्रयोग भी किया गया है। अध्ययन इकाई के रूप में प्रत्येक परिवार के मुख्या का चयन उत्तरदाता के रूप में किया गया है।

## तथ्य विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संकलित तथ्यों के आधार पर निम्नलिखित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

**तालिका 1**

**जाति प्रथा समाप्त होनी चाहिए के विचार पर उत्तरदाताओं की राय**

| क्रम संख्या | जति प्रथा समाप्त होनी चाहिए | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | सहमत | 190 | 80.00 |
| 2 | असहमत | 47 | 20.00 |
| | **योग** | **237** | **100.00** |

उपरोक्त तालिका 1 के आंकड़ों का विश्लेषण करने से विदित होता है कि अधिकांश उत्तरदाता जाति प्रथा समाप्त होने के पक्ष में हैं। अध्ययन में पाया गया कि 80 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिन्होंने कहा कि जाति प्रथा समाप्त होनी चाहिए। 20 प्रतिशत उत्तरदाता के मतानुसार जाति प्रथा को समाप्त नहीं होना चाहिए। 190 उत्तरदाताओं की राय जाति प्रथा समाप्त होने के पक्ष में है। परिवर्तन के फलस्वरूप ग्रामीण पृष्ठभूमि में भी जाति के प्रति लोगों की राय में परिवर्तन की स्थिति देखी जा सकती है।

**तालिका 2**

**विवाह प्रणाली में परिवर्तन के आधार पर उत्तरदाताओं की राय**

| क्रम संख्या | विवाह प्रणाली में परिवर्तन | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | सहमत | 209 | 88.33 |
| 2 | असहमत | 28 | 11.67 |
| | **योग** | **237** | **100.00** |

तालिका संख्या 2 के आंकड़ों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण जनता के विवाह प्रणाली में परिवर्तन के दृष्टिकोण को जानने पर ज्ञात होता है 88 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिनका मानना है कि वर्तमान समय में विवाह की प्रणाली में परिवर्तन हो रहा है। 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार विवाह प्रणाली में परिवर्तन नहीं हो रहा है। स्पष्ट है कि बढ़ते हुए औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, शिक्षा के व्यापक प्रसार, धर्म के प्रभाव में कमी, विवाह सम्बन्धी कानूनों के उदार होने आदि के कारण नगरों में विवाह का परम्परागत स्वरूप बदल रहा है, परन्तु प्राप्त आंकड़ों के आधार पर हम कह सकते हैं कि ग्रामीण पृष्ठभूमि में यह बदलाव अभी व्यापक स्वरूप में दृष्टिगोचर नहीं हुआ है।

**तालिका 3**

**कृषि की अपेक्षा उद्योगों की ओर अधिक आकर्षित होने सम्बन्धी विचार पर उत्तरदाताओं की राय**

| क्रम संख्या | कृषि की अपेक्षा उद्योगों की ओर अधिक आकर्षित | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | सहमत | 237 | 100.00 |
| 2 | असहमत | 00 | 00.00 |
| | **योग** | **237** | **100.00** |

भारत कृषि प्रधान देश होने का सबसे मुख्य कारण यहाँ कि अधिकांश जनसंख्या का कृषि कार्य में संलग्न होना है। परन्तु वर्तमान समय में ग्रामीण कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय में भी संलग्न होने लगा है। कृषि कार्यों के प्रति उदासीनता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। उपरोक्त आंकड़ों के द्वारा हम जान सकते हैं कि अध्ययन क्षेत्र की 100 प्रतिशत जनसंख्या यह मानती है कि ग्रामीण अब कृषि कार्य की अपेक्षा उद्योगों की ओर अधिक आकर्षित होने लगी है।

**तालिका 4**

**साक्षरता के स्तर में पहले की अपेक्षा वर्तमान ग्रामीण स्थिति में परिवर्तन पर उत्तरदाताओं की राय**

| क्रम संख्या | साक्षरता के स्तर में पहले की ग्रामीण स्थिति से वर्तमान स्थिति में परिवर्तन | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | सहमत | 237 | 100.00 |
| 2 | असहमत | 00 | 00.00 |
| | **योग** | **237** | **100.00** |

तालिका संख्या 4 के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि सभी 100 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत है कि साक्षरता की स्थिति में पूरे ग्रामीण परिवेश में परिवर्तन देखा जा रहा है। अध्ययन में भाग लेने वाले सारे उत्तरदाता एकमत है और उनका मानना है कि

शिक्षा का स्तर अब वर्तमान समय में काफी परिवर्तित हो चुका है।

**तालिका 5**

**लडकियों को उच्च शिक्षा देने के पक्ष में उत्तरदाताओं की राय**

| क्रम संख्या | लडकियों को उच्च शिक्षा देने के पक्ष में | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | सहमत | 230 | 97.00 |
| 2 | असहमत | 07 | 03.00 |
| | **योग** | **237** | **100.00** |

तालिका संख्या 5 से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि लड़कियों को उच्च शिक्षा दिलाई जानी चाहिए। 97 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिनका कहना है कि लडकियों को शिक्षा के अवसर दिये जाए तथा उन्हें आगे बढ़ाने के लिए उच्च शिक्षित किया जाना आवश्यक है। 03 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिनका मानना है कि लड़कियों को उच्च शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए।

## निष्कर्ष

वर्तमान में परिवर्तन के कारण समाज में कई भिन्नताएं सामने आई हैं। सम्पूर्ण समाज परिवर्तन के पक्ष को नकार नहीं सकता यह गति कहीं तीव्र तो कहीं मन्द आकी गई है। नगरों के साथ–साथ ग्रामों को भी परिवर्तन के फलस्वरूप नये रूप में देखा जा सकता है। इस परिवर्तन के चलते ग्रामीण पृष्ठभूमि में भी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इस अध्ययन में ग्रामीण पृष्ठभूमि में आये परिवर्तन से ग्रामीण कितने सहमत है और कितने असहमत यह जानने का प्रयास कर एक अध्ययन किया गया है। परिवर्तन के कारण ग्रामीण परिवेश मे ंतो अन्तर आया ही है साथ ही साथ ग्रामीण व्यक्तियों की सोच तथा नजरिये में भी बदलाव समय के साथ देखा जा सकता है। परिवर्तित समाज के कई रूप सामने आये हैं जैसे कि तालिका 1 में उत्तरदाता जाति प्रथा समाप्त होने के पक्ष में हैं। अध्ययन के परिणामों में देखा गया 80 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिन्होंने कहा कि जाति प्रथा समाप्त होनी चाहिए। 20 प्रतिशत उत्तरदाता के मतानुसार जाति प्रथा को समाप्त नहीं होना चाहिए। 190 उत्तरदाताओं की राय जाति प्रथा समाप्त होने के पक्ष में है। परिवर्तन के फलस्वरूप ग्रामीण पृष्ठभूमि में भी जाति के प्रति लोगों की राय में परिवर्तन की स्थिति देखी जा सकती है। ग्रामीण जनता के विवाह प्रणाली में परिवर्तन के दृष्टिकोण को जानने पर ज्ञात हुआ, 88 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिनका मानना है कि वर्तमान समय में विवाह की प्रणाली में परिवर्तन हो रहा है। बढ़ते हुए औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, शिक्षा के व्यापक प्रसार, धर्म के प्रभाव में कमी, विवाह सम्बन्धी कानूनों के उदार होने आदि के कारण नगरों में विवाह का परम्परागत स्वरूप बदल रहा है। भारत कृषि प्रधान देश होने का सबसे मुख्य कारण यहां कि अधिकांश जनसंख्या का कृषि कार्य में संलग्न होना है, परन्तु वर्तमान समय में ग्रामीण कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय में भी संलग्न होने लगा है। कृषि कार्यो के प्रति उदासीनता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अध्ययन क्षेत्र की 100 प्रतिशत जनसंख्या यह मानती है कि ग्रामीण अब कृषि कार्य की अपेक्षा उद्योगों की ओर अधिक आकर्षित होने लगी है। सभी 100 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि साक्षरता की स्थिति में पूरे

ग्रामीण परिवेश में परिवर्तन देखा जा रहा है। अध्ययन में भाग लेने वाले समस्त उत्तरदाता एकमत है और उनका मानना है कि शिक्षा का स्तर अब पहले के समय से काफी परिवर्तित हो चुका है। 97 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिनका कहना है कि लड़कियों को शिक्षा के अवसर दिये जाए तथा उन्हें आगे बढ़ाने के लिए उच्च शिक्षित किया जाना आवश्यक है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, अलख नारायण, ''ग्रामीण समाज एवं परिवर्तन'', राधा कमल मुखर्जी, चिन्तन परम्परा, जनवरी–जून, बिजनौर (उ0प्र0) 2006
2. बिष्ट, शंकर, अनुसूचित जातियों के परम्परागत व्यवसायों को प्रभावित करने वाले कारक एवं परिणाम, कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, शोध प्रबन्ध, 2007, पृ0205